निवाला

एक कोशिश

स्मारिका

फरवरी
2018

दीपा करमाकर

ऑलंपिक में क्वालीफाई करने वाली 1 भारतीय महिला जिम्नास्ट 22 साल की दीपा ने क्वालीफाइंग इवेंट में 52.698 अंक हासिल कर रियो ऑलंपिक का टिकट हासिल किया 15 साल के बाद 1 मौका होगा जब भारत का कोई एथलिट ऑलंपिक की जिमनास्टिक प्रतियोगिताओ में हिस्सा लेगा। ऑलंपिक क्वालीफायर में दमदार प्रदर्शन करने वाली दीपा पूरे देश की सुर्खियां बटोर रही है। लेकिन बहुत कमलोगों को पता होगा कि उन्हें इस खेल में क्लैट फुट के कारण रिजेक्ट किया गया था ।इस समस्या के कारण उछल-कूद में दिक्कत आती है। (पांव के तलवे पूरी तरह सपाट) व दीपा जब 6 साल की थी तब उनके पिता जिम्ना सिखाने के लिऐ एक कोच के पास ले गए पिता चाहते थे कि बेटी जिम्ना बने लेकिन कोच ने दिपा के क्लैट फुट देखकर उसे दूसरे खेलों में जाने की सलाह दी इससे दीपा निराश हुई लेकिन पिता ने उन्हे इस दौर से बाहर निकाला व जिम्ना बानाने की ठान ली दीपा ने पिता की इच्छा पूरी करने के लिए 6 साल की उम्र से कड़ी मेहनत शुरू कर दी। उनकी मेहनत रंग लाई और उनकी सफलताओं का सिलसिला शुरू हो गया। दीपा जिम्नास्ट सबसे पहले चर्चा में तब आई जब उन्होंने ग्लासगो में हुऐ कॉमनवेल्थ गेम्स में कांस्य जीता । दीपा जम्नास्ट के जिस इवेंट प्रोडुनोवा में शिरकत करती हैं। उसे काफी मुश्किल माना जाता है। दीपा की उपलब्धि इसलिए भी बडी हो जाती है कि 60 के दशक के बाद भारत का कोई भी खिलाडी ऑलंपिक जिम्नास्टिक में शिकरत नही कर पाया है। माता- गीता करमाकर, पिता -....., दीपा करमाकर गुरू- विश्वेश्वर नदी, जन्म भारत के उ.पू. राज्य त्रिपुरा (अगरतला) देश की पहली महिला जिम्नास्ट है-11 पूर्व जिम्नास्ट सभी पुरूष हैं। प्रोडुनोवा क्या है- रूसी जिम्नास्ट ये लेना प्रोडुनोवा के नाम पर, जिन्होने 1999 में 1 बार बॉल्ट का आयोजन किया था प्रोडुनोवा में अग्रेषित किया गया हेल्थप्रिंग डबल स्मरगेट होता है जहां जिम्नास्ट बोर्ड से वॉल्ट में आगे बढ़ता है पहले लैंडिंग कीट से पहले 2 तरह के प्रदर्शन करता है। यह केवल 5 महिला जिम्नास्ट ने इस वॉल्ट का प्रयास किया जिससे इसकी कठिनाई का पता चलाता है। 22 वर्षीय करमाकर पांच बार की राष्ट्रीय जिम्नास्टिक चैम्पियन है। उनका सबसे बडा पल 2014 राष्ट्रमंडल खेलो में ग्लास्गो पहुची वह फाइनल में 8 वें स्थान पर रही थी इस खेल की शुरूआत दिलीप सिंह ने की अगरतला में वस्तुतः करमाकर के लिए जिम्नास्ट में ऑलंपिक तक का सफर आसान नही रहा क्यांकि करमाकर के पैरो की बनावट इस खेल के लिए उपयुक्त नहीं थी इसलिए उनके कोच विश्नेश्वर नंदी ने करमाकर को इस खेल के लिए मना किया लेकिन करमाकर की लगन व समर्पण के आगे उनको झुकना पड़ा। दूसरी समस्या भारत में यह खेल (जिम्नास्ट) अधिक लोकप्रिय नहीं है अतः करमाकर को अमेरिका, रूस और रोमानिया से उसकी प्रतियोगिता जैसी प्रशिक्षण सुविधाऐ, अवसंरचना या समर्थन नहीं था जन्म-9 अगस्त 1993 अवार्ड-पदमश्री, अर्जन, राजीव गांधी खेल रत्न योर जिम्नास्टिक क्लैट फिट के कारण हाल में समस्या आ रही थी। विभिन्न प्रतियोगिताओ में कुल 77 पदक जिनमें 67 स्वर्ण पदक है।

पुंखुडियाँ इस पुष्प की

कमलाबाई चेरिटेबल ट्रस्ट
निवाला एक कोशिश
स्मारिका - वर्ष 3, अंक-3, मार्च 2018

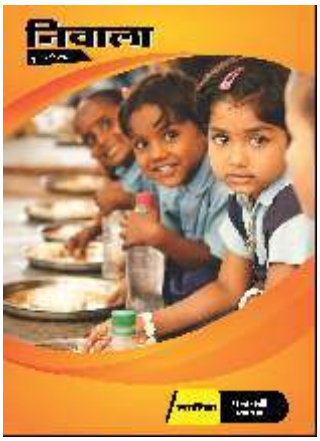

मंत्र

यत्राभ्यागवदानमान चरण पक्षालनं ।
भोजन सत्सेवा पितृदेववार्चन विधिःसत्यंगवां पालनम्।।
धान्या नामवि संग्रहो न कलहश्चित्ता तूरूपा प्रिया।
दृष्टा प्रहा हरि वसामि कमला तस्मिन गृहे निष्कला।।

भावार्थ

जहाँ मेहमान का सत्कार किया जाता है तथा सज्जनों की सेवा की जाती है जहाँ निरन्तर अन्य धर्मकार्य किये जाते हैं सत्य का पालन किया जाता, जहाँ गलत कार्य व क्लेश नही होता, जहाँ दान देने हेतु धन-धान्य का संग्रह किया जाता है। जहाँ मनुष्य विनम्र व संतोषी होते है ऐसी जगह पर मैं सदा निश्चल रूप से रहती हूँ।

संरक्षक व प्रधान सम्पादक:
देवेन्द्र शर्मा

मुख्य सम्पादक
सुरेन्द्र कुमार शर्मा

सम्पादन
मदन चौधरी

सह-सम्पादक
रंजना दुबे

ग्राफिक डिजाईनर
शिवम् पारीक

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.	विषय	पृष्ठ सं.
बेटियाँ	2	वृक्षा रोपण	17
पंखुडियाँ इस पुष्प की	3	कहानी नसीहत	18
संस्थापक की कलम से	4	परिण्दा अभियान	19
ट्रस्ट एक नजर में	5	गलतफेमियां	20
संकल्पना	6	निवाला सेवा आश्रम	21
चुनाव स्वंय का	7	संस्थान समाचार	22
तात्कालिक सेवा प्रकल्प	8	संस्थान के सेवा प्रकल्प	23
सँवारे बचपन	9	दर्शन सेवा	24
श्रीमद्भगवत्गीता	10	सहयोगी हाथ	25
निवाला	11	स्वास्थ्य	26
सही निष्ठा सही सोच से ही भाग्य का उदय	12	स्वयंसेवक	27
आई केयर	13	स्वयं सेवक	28
महापुरूषो की जीवनी	14	अख़बार की नज़र से	29
सफाई अभियान	15	आप श्री से सहयोग की अपेक्षा	30
अनमोल वचन	16	संस्था के भामाशाह	31

कमलाबाई चेरिटेबल ट्रस्ट
नई राह - नई दृष्टि..! , ज्ञान वही - वही सृष्टि..!!

रजि ऑफिस : जी 1, कृष्णा विला, प्लाट न :113, आदिनाथ नगर, सिरसी रोड़ जयपुर - 302012 (राज.)
ब्रांच ऑफिस : 155, माँ हिंगलाज नगर-बी, गाँधीपथ रोड़ पश्चिम, वैशाली नगर, जयपुर-302021 (राज.)
+91-7231-8888-00 / 11 / 22 / 33
info@kbctindia.org https://www.facebook.com/KamlabaiCharitableTrust
www.kbctindia.org | YouTube kbct

संस्थापक की कलम से

पूज्य पिताश्री स्वर्गीय श्री राधेश्याम शर्मा जी
की पावन स्मृति में –

किसी भी इंसान के जीवन में माता – पिता प्रथम गुरू होते हैं। हमारे स्वः पूज्य पिताश्री द्वारा दी गयी शिक्षा का हम पर गहरा प्रभाव पड़ा। पिताजी कहते थे कि जीवन में ऊँचा उठने के लिए किसी डिग्री, धन –दौलत की आवश्यकता नहीं होती बल्कि सच्चे मन से की गई मानवीय सेवा ही किसी इंसान को इंसान के दिलों का बादशाह बना देती है। सेवा से ही प्रकृति व हम –सबकी भलाई है।

स्वर्गीय श्री राधेश्याम जी शर्मा

देवेन्द्र शर्मा (संस्थापक)

जीने का सार

एक सरल प्रश्न – यदि हम अपने आस-पास के लोगों व अन्य प्राणियों आदि को प्रेम न करे, तो हम यह कैसे कह सकते हैं कि हम ईश्वर को चाहते हैं हम स्वयं को मनुष्य नहीं कह सकते अगर हम अपने भाईयों-बहनों को दुःखी व संघर्ष करते हुए देखते रहते हैं।

आपस की बात

स्वामी विवेकानंद ने इस बात पर विशेष जोर दिया और कहा की इस दर्द और दुःखों से भरे विश्व में प्रार्थना और ध्यान से व्यक्तिगत मुक्ति की परम्परागत पद्धति ईश्वर साक्षात्कार के लिए पर्याप्त नहीं है। व्यक्ति को अन्य लोगों की सेवा का संकल्प भी लेना चाहिए। मानवों में मौजूद जीते-जागते ईश्वर की सेवा ही जीवन का परम लक्ष्य हैं। यदि हम ईश्वर से कुछ चाहते है तो हमें अपने साथियों की सेवा की इच्छा से भर जाना चाहिए। क्योंकि काम के बिना प्रार्थना उतनी ही बुरी है जितना प्रार्थना के बिना काम। ईश्वर का हमारी आराधना और भक्ति से संतुष्ट नहीं किया जा सकता, यदि वे सिर्फ हमारे होठों से आती हों। हमारा हृदय व जीवन में भी भक्ति व सेवा समर्पण होना चाहिए। जब मानव-सेवा की बात होती है तो हम मन में सोचते होंगे, हम कोई करोड़पति –अरबपति तो नहीं है हम तो सीमित संसाधनों वाले लोग है। हम पीड़ित मानवता की सेवा करने की आकांक्षा कैसे रख सकते है ?

भगवान जब चाहते हैं तो हमारे भीतर की न्यूनतम सामर्थ्य को सेवा के महान कार्यों में इस्तेमाल कर सकते हैं। यदि हम पीड़ित मानवों के कष्टों को कम करने के लिए नही जीते तो हमारा जीवन किस काम का निस्वार्थ जीवन जीने में ही हम समझ सकते है कि सर्वोत्कृष्ट क्या है जो करने की क्षमता हममें है।

अन्त में, हम सब प्रेम, उदारता, वाणी आदि में तो धनी हो सकते है जिससे हम हमेशा पीड़ित लोगों को उनके प्रति हमारी प्यार भरी चिंता और महत्ता तो दे ही सकते है- जो दुनिया की सारी संपत्ति से अधिक मूल्यवान है।

करूणामयी माँ संत श्री कमलाबाई

मातृछाया...

भगवान को मंदिर से ज्यादा, मनुष्य का हृदय पसंद है।
क्योकि मंदिर में इंसान की व्यवस्थाएं है जबकि हृदय में भगवान की व्यवस्थाएँ।।

सृष्टि के आदिकाल से प्रकृति व मानव के सृजन व विकास का मूल आधार परोपकार अथवा सेवा है इसलिए हमारे महान पूर्वजों, ऋषि- मुनियों ने सेवा को सबसे बड़ा धर्म बताया। शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, धार्मिक व वैज्ञानिक सभी दृष्टिकोण से परोपकार या सेवा करना आवश्यक है क्योंकि परोपकार से ही मानव व अन्य प्राणी, प्रकृति का विकास होता है इसके विपरीत अगर हम परस्पर सहयोग नहीं करते, परोपकार की भावना नहीं है। हम एक -दूसरे के प्रति असहयोगात्मक व्यवहार करने लग जाते हैं तो विनाश की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। धरती, नदियां, पेड़-पौधे, बादल आदि परोपकार द्वारा मानव व अन्य प्राणियों का विकास करते हैं तथा मानव इन सभी के प्रति अपना कर्त्तव्य निभाकर इनका विकास करता है। धरती हम सभी मनुष्यों व सभी प्राणियों को शरण देकर जीवन देती है। नदियां स्वयं अपना जल नहीं पितीं बल्कि हम सब प्राणियों को अमृत पिलातीं है। पेड़-पौधे अपने फल स्वयं नहीं खाते, अपितु हम इन्हें (फलों) खाकर स्वस्थ बनते हैं। बादल धरती पर बरस कर हमें अन्न -धान्य से परिपूर्ण बनाते हैं। वस्तुतः सारी सृष्टि परोपकार करके हमारे जीवन का विकास करती है।

परोपकार अथवा सेवा हमारे जीवन का प्राथमिक कर्त्तव्य तथा जरूरत है। इसी भावना के अर्न्तगत परोपकार की छोटी सी कोशिश के रूप में कमलाबाई चैरिटेबल ट्रस्ट का उद्भव हुआ। सेवा करने के लिए संसाधन की नहीं, बल्कि संकल्प तथा आपश्री महानुभावों के आशीर्वाद की जरूरत अधिक है, संसाधन तो स्वतः उपलब्ध हो जाते हैं। मेरा यह दृढ - विश्वास है कि अगर दुनिया के एक-तिहाई लोग भी परोपकार का संकल्प ले लें तो अपनी धरती पर स्वर्ग का अवतरण हो जाएगा।

संकल्पना

कमलाबाई चैरिटेबल ट्रस्ट के उदयन में यह संकल्पना निहित है। कि इन्सानियत व मानवता ही धर्म है। चाहे लोग अलग–अलग जाति, धर्म, समुदाय में बटे हुए है। सभी के अन्दर जो प्राण है। या जो खून है। जो हमें बनाने वाला परम बुद्धय है। वो तो एक ही है। ट्रस्ट सभी को पुजनीय की दृस्टि से देखता है। जहाँ भूखा हो खाना खिलाना है। जहाँ शिक्षा की कमी है। शिक्षा की व्यवस्था करनी है। ट्रस्ट का मानना है, कि जहाँ भी मानवीय मुल्य का पतन हो रहा है। सभी को जागरूक करके पुन: स्थापित किया जाये, साथ ही जहा भी मदद की जरूरत हों वहाँ पर मदद के लिऐ तत्पर रहना है। ईश्वर हमारे द्वारा कियें जा रहें कार्य को बराबर देख रहा है। अत: कभी भी यह नही सोचना चाहिऐ की मुझे कोई नही देख रहा है। किसी को खाना खिलाना, किसी की शिक्षा के लिऐ प्रयास करना, जितना हो सके जरूरत मंदो को मदद करना ही इंश्वर की सेवा है। इसी सोच के साथ ट्रस्ट परिवार सामाजिक सेवा प्रकल्पों में लगातार प्रयासरत रहेंगा। अत: ट्रस्ट के संस्थापक महोदय श्रीमान् देवेन्द्र शर्मा का मानना है। कि प्रत्येक जीव मात्र की सेवा ही ईश्वर की सेवा है। लेकिन समस्या उन लोगो के लिऐ गहन हो जाती है। जो या तो आर्थिक रूप से सक्षम नही होते है। या आखा के प्रति जागरूक नही है। और सोच लेते है। कि अब तो मेरी उदय हो गई आखों को तो जाना ही है। फिर एक दिन मुझे भी जाना है। ट्रस्ट एसे लोगों को सर्वे के माध्यम से तलास कर उस क्षेत्र में केम्प लगाता है। ताकि उन के अधुरे जीवन में पुन: राशनी लोट आऐं।

संस्थान की मुख्य व तीसरी प्राथमिकता है।

प्राथमिकता

निवाला

आज हम लोग सभी संस्थानो से परिपूर्ण है। गाड़ी है बंगला, फार्म हाउस है। व्यवसाय है। कभी हमने कही ग्रामीण क्षेत्र में जाकर या सरकारी हॉस्पिटल में जाकर नही देखा है। कि कितने ही लोग आर्थिक समस्याओं के कारण खाना नहीं खा पा रहे है। अगर खाना मिला भी है। तो भर पेट नहीं मिलता है। या अच्छा खाना नहीं खा पाते है। लेकिन हम सभी व्यवस्थाओं के साथ रहतें है। तो सब जगह ठीक हमारे यहा सब ठीक चल रहा है। तो सब जगह ठीक ही होगा लेकिन ऐसा नही है। इस लिऐ यह सोचने समझने और विचार करने का विषय है। इसी विचार के साथ ट्रस्ट ने राजस्थान के सबसे बड़े हॉस्पिटल एस.एम.एस के बागड़ गेट नं. 5 पर 20 जुलाई 2016 से नि:शुल्क भोजन व्यवस्था प्रारम्भ की जो आज भी निरन्तर जारी है। और एक दिन देश में कोई भी भूखा नहीं सोयेगा इस के लिए प्रयासरत है।

संवारे बचपन –कोई बेटी अनपड़ नही है

हमारे समाज को लेकर विवेकानंद जी के कहा है जिस समाज कि बेटियाँ शिक्षित है। तो आने वाली पिढ़ी भी निश्यत रूप से शिक्षित होंगी हमारी प्रथम गुरू माता ही होती है। और सभी संस्कार हमे माता से ही सिखते है। और माता बहीन , बेटी हो अगर शिक्षित व संस्कार नहीं होगी तो हमारा तो सारा समाज ही दिशा हीन हो जायेगा। और हमारे समाज में जब भी कोई कठीनाई आती है। आर्थिक समस्या आती है। तो सबसे महिला पहाडा बेटी को शिक्षा को लेकर ही टुटता है। अभी ग्रामिण क्षेत्र ये लोगो की धारणा होती है। की बेटी को जरूरी नहीं है। इसे ता अगले घर जाना है। किचन सभालना है। लेकिन ये लोग भूल जाते है। कि आज बेटियाँ देश, देश की सीमाओ को संभाल कर सिमाओं पर चोकसी करती है। बेटी को शिक्षा से ही एक सभाय व संस्कारवान समाज की कल्पना की जा सकती है। इसी मिशन को लेकर ट्रस्ट परिवार में तय: किया कि जहां भी आर्थिक समस्याओं की वजह से बेटियॉ पढ़ाई नहीं कर पा रही है। उन्हे शिक्षा में जोड़ कर उन को पड़ाने व संस्कारवान बनाने में मदद करती है। यह ट्रस्ट की मूल और दूसरी प्राथमिकता है।

अन्धाता

ग्रामीण क्षेत्र में जाते है। तो देखते हैं कि बहुत सारे लोग आखों की बिमारी मोतियाबिन्द से ग्रस्त है। यह बिमारी लगभग 40 से 70 वर्ष की आयु में सभी को हो जाती है। लेकिन जो लोग आर्थिक रूप से सक्षम होते है। तो किसी भी रूप में अपना ईलाज करवा लेते है।

चुनाव स्वंय का

सचिव की कलम से

इस समस्त विश्व को पालना चलाना, और सभी चीजो को अनुशानात्मक तरीके से रखना, सभी को समय पर भोजन वस्त्र पानी हवा मकान जरूरत की सभी चीजे उपलब्ध करवाना ईश्वर की ही जिमेदारी हैं मुझे लगता हैं सायद ईश्वर की मर्जी के बिना तो एक पता भी नही हिल सकता है। जैसे एक पिता अपनी सन्तान के लिए सब कुछ सुखी-सुखी करता हैं ।लेंकिन बड़ा होकर वह पुत्र ही अपनी व अपने पिता जी की जिम्मेदारी स्वय उठा लेता है। तो पिता को बहुत प्रसन्नता महसुस होती है। ठीक उसी प्रकार जब सभी का पालन पोषण ईश्वर की जिम्मेदारी होती है। और जब इस जिम्मेदारी को हम स्वंय की जिम्मेदारी समझ कर किसी भूखे को खाना खिलाते हैं ।किसी गिरे हुऐ को उठाते है।किसी अन्धे आदमी को रोड़ पार कराते है।तो ये सब कार्य हम ईश्वर के लिऐ ही करते है।हा हमारी जिम्मेदारी सायद नही होती लेकिन यह ईश्वर की जिम्मेदारी है।

लेकिन कभी ईश्वर ने हमें भी उठाया होंगा हमे भी परेशानी के वक्त में ईश्वर ने मदद की होगीं।तो आज हमारा कर्त्वय बन जाता है।कि हम भी किसी की मदद करे जब निस्वाश भाव से इस प्रकार की सेवा करते है। तो भगवान मन ही मन बहुत प्रसन्न होते है। एक पिता सोचता है। मेरा बेटा समझदार हो गया है।बडा़ हो गया है।और पिता का सीना गर्व से फूल जाता है। इसी तरह ईश्वर भी सोचता है। मेरा बनाया इंसान सही निष्ठा के साथ। सही दिशा में कार्य कर रहा है। उस इन्सान का चुनाव ईश्वर स्वयं के प्रतिनिधी के रूप में करता हैं फिर उस पर भगवान की कृपा हमेशा बनी रहती है। ईश्वर हमेशा लोगो को अपना स्वय का मार्ग तय करने का अवसर देता है। अब हमें ही सोचना है।कि हमें क्या करना है।और निश्चित ही आज से हमे ईश्वर कार्य का प्रतिनिधित्व करने का चुनाव करना हैं। जैसे जैसे हम सेवा कार्य करेंगे हमें हमेशा इस बात का बोध होता रहेगा कि ईश्वर ने मुझे विशेष कार्य के लिये चुना है।और ये स्वयं ईश्वर कार्य है।दौस्तो आज भी दुनिया में बहुत सारे लोग है।जिनके द्वारा उपरवाला कमजोर गरीब भूखो असहायों की मद्द करवाता है। लेकिन क्या हम उन लोगो मे से हैं।जिन्हे उपरवाला असहाय गरीब, मजबूर भूखे लोगो की मद्द के लिये चुनता है। यह हमें स्वय सोचना है। विचार करना है।

इस बात पर गौर करेगें

दोस्तो- वक्त का कुछ पता नही कब किस के साथ हो जाये।और किस का साथ छोड़ दे कब किस के साथ क्या हो जाये, आज हम जिन जरूरतमंदो, गरीब को देखकर मुंह मोड़ लेते है।क्या पता कल हमारी स्थिती भी वैसी हो जायें। क्या पता कल हमें भी किसी मुसिबत का सम्मान करना पहुचायें और क्या पता कल हमें ही किसी की मदद को जरूरत पड़ जाये।

इस लिए जहां हो सके जितना हो सकें, जितना भी आप कर सकते है।जरूरतमंदो की मद्द करे कही भी किसी को आप मजबूर देखो, किसी को असहाय देखो तो उसकी मद्द कीजिए कहीं भी भुखा दिखें तो कोशिश करे उस को खाना खिलाऐं।

सचिव : मदन चौधरी

एक कोशिश निवाला प्रतिदिन निःशुल्क भोजन वितरण

तात्कालिक सेवा प्रकल्प

सँवारे बचपन – सहायता की प्रतिक्षा में बालिकाऐं

उजाला चौहान	पायल बैरवा	भाग्य श्री अटोलिया	मनीषा प्रजापत
आरती सिंह	महक सैन	करिश्मा कुमारी	गोदावरी शर्मा
सोमवती पांडये	सपना बुनकर	कमलेश दरोगा	आकांशा काला
काजल	चंचल	आरती हरिजन	आरती कंवर
पायल मोर्य	पायल बुनकर	मन्दोदरी वर्मा	निशा वर्मा
पूजा कुमारी	रीना राठौड़	पल्लवी सैन	लक्षिता वर्मा
मोनिका रैगर	आयुषी शर्मा	ज्योति कासोदिया	हंसा कुमावत
कविता कुमारी	माया सोनी	कमलेश सैन	तमन्ना सिंह
गुड़ीया कुमारी	प्रिति भाटी	मोनिका बुनकर	
आरती कुमारी वर्मा	सीमा गुर्जर	नेहा गुजराती	

आमन्त्रण

प्रिय श्री,

कमलाबाई चेरिटेबल ट्रस्ट की मासिक पत्रिका ''निवाला'' एक कोशिश के लिए आप सभी पाठ्कों को हम आमन्त्रण दे रहे हैं कि अगर आप के पास कोई लघु कथा हो, प्रोत्साहित करने वाली कविता हो, कोई पोराणिक कथा हो जिसे श्रृंखला बद्ध करके पत्रिका में दी जा सके, कोई लेख हो, देश-भक्ति से जुडी कोई कहानी हो, कोई ऐसी घटना हो जो और लोगों को सम्बल प्रदान कर सके आप हमें अवश्य भेजें। अगर आप की कहानी,लेख, कथा या कविता कमेटी द्वारा चुनी जाती है तो उसे हमारी पत्रिका में अवश्य ही शामिल किया जायेगा। आप की लघु कथाओं, कहानियाँ, लेखों, कविताओं का हमें इन्तज़ार रहेगा।

धन्यवाद

कमला बाई चेरिटेबल ट्रस्ट

सुझाव

प्रिय श्री,

कमलाबाई चेरिटेबल ट्रस्ट की मासिक पत्रिका एक कोशिश निवाला आपके हाथों में है। हमने भरपूर कोशिश की है कि ट्रस्ट द्वारा किये जा रहे नि:शुल्क सेवा प्र:कल्प आपश्री तक पहुँचे और आपके सहयोग से उन ग़रीब, असहाय, लाचार और असक्षम लोगो की मदद हो जिन्हे आपके और हमारे सहारे की अत्यधिक आवश्यता है। आपश्री से भी अनुरोध है कि अगर पत्रिका से सम्बन्धित कोई सुझाव आप देना चाहते हैं तो नि:संकोच हमें लिख भेजे ताकि दिन-प्रति दिन पत्रिका ''निवाला'' एक कोशिश में सुधार होता रहे। आपके बहुमुल्य सुझावों की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

धन्यवाद

कमला बाई चेरिटेबल ट्रस्ट

सँवारे बचपन

कमलाबाई चैरिटेबल ट्रस्ट की एक योजना है, सँवारे बचपन इस योजना में सबसे महत्वपूर्ण बात है। बालिका शिक्षा को बढ़ावा देना, इस योजना में वो सब बालिकाऐं आती है। जिन की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है, या किसी दुर्घटना के कारण उनकें माता-पिता नहीं रहे। हमारें समाज में आज भी यह धारणा है। कि बालिका का पढ़ना इतना जरूरी नहीं है जितना बालकों का है। आज वे सभी हमारे शिक्षित समाज में कई प्रकार की कुरूतियाँ व्याप्त है। जिस का परिणाम हम रोज अखबार , न्युज , पैपर, न्युज चैनल्स में देखते है। जिस का सीधा असर हमारी बेटियों पर पड़ता है। जब भी परिवार में आर्थिक संकट आता है, तो सबसे पहला पहाड़ बेटियों की शिक्षा पर ही टुटता है। अकसर कहा जाता है कि पढ़ाने के लिऐं रूपयें नहीं है, तो बेटीं की पढ़ाई बन्द कर दो। इसे तो परायें घर जाना है। वही समाज यह नहीं सोचता है, कि आज हमारी बेटियाँ, देश की सुरक्षा में हमारें देश की सीमाओं पर भी 24 घंटे अपना कर्त्तव्य, पूर्ण समर्पण व निष्ठा के साथ निभाती है।

बेटी अगर शिक्षित हैं तो हमारा पूरा समाज भी शिक्षित होता है। आज हम बेटियों को तो पढ़ाना ही नहीं चाहतें और चाहतें है कि हमारी बहू के इलाज के लिऐं महिला डॉ. ही चाहिए। कहाँ से लायेंगें महिला डॉ. ? बहू के रूप में भी हमेंशा हमारा समाज पढ़ी लिखी बहू चाहता है। लेकिन बेटी को नहीं पढ़ाना चाहता है। जहाँ आर्थिक समस्याऐं आ जाती है। तो बेटा तो पढ़ता रहता है। कर्ज लेकर भी बेटे की शिक्षा तो जारी रखा जाता है। लेकिन बेटी की शिक्षा को रोक दिया जाता है। हमारी संस्थान के सर्वे के दौरान इस तरह के कई कारण सामने आए है। इसी को ध्यान में रख कर कमलाबाई चैरिटेबल ट्रस्ट ने एक योजना शुरू की जिसका नाम है। **सँवारें बचपन** जों बेटियाँ आर्थिक रूप में कमजोर है। या किसी कारण वस उनकें पिताजी नहीं रहें उन बेटियों के लिए 12000 रूपयें वार्षिक छात्रव्रती की योजाना बनाई हैं जिस से इन बेटियों का शिक्षा का खर्च उनकें परिवार पर नहीं आऐं। तो वो बेटियाँ अपनी शिक्षा पूर्ण कर सकें। इस प्रकार की 15 बेटियों को संस्थान ने गोद लेकर उनकी शिक्षा की जिम्मेदारी उठा रखी है। लेकिन और भी बालिकाएं है। अगर उनको सहयोंग नहीं मिला तो उन की शिक्षा भी रूक जाएगी ट्रस्ट के पास बालिकाओं की सूची है। जिनकों तुरन्त सहयोंग की आवश्यकता है। यह सब आप के सहयोंग से ही सम्भव है। आप सभी भामाशाहा का सहयोग मिला तो हम निश्चित रूप से कोशिश करेगें की देश में एक भी बेटी अशिक्षित नहीं रहे।

शिक्षा के लिए छात्रवृती चेक प्रदान करते हुए संस्थान के सचिव।

एक कोशिश निवाला प्रतिदिन निःशुल्क भोजन वितरण

श्रीमद्भगवत्गीता

हे प्रभु। मैं मूर्ख हूँ, हुआ मुझे अज्ञान।
शरणागत हूँ आपकी, मुझे दीजिए ज्ञान।।

संजय, जो युद्ध भूमि का सारा हाल देख रहे थे, महाराज धृतराष्ट से बोले राजन्! आंखो में आंसू भरे व दुःखी अर्जुन से भगवान श्री कृष्ण ने कहा। हे अर्जुन।

तुम्हें युद्ध भूमि में यह अज्ञान कैसे हुआ ।इस स्थिति में श्रेष्ठ मनुष्य ऐसा नहीं करते, क्योंकि यह अज्ञान न तो यश,न ही स्वर्ग को देने वाला है। इसलिए तुम यह दुर्बलता त्याग युद्ध करने के लिए तैयार हो जाओ ।अर्जुन भगवान श्री कृष्ण से बोले। हे भगवन ! मैं सम्माननीय गुरू द्रोणाचार्य व पितामह भीष्म से कैसे युद्ध करूँ क्यों कि इनसे युद्ध करने से तो मर जाना ही अच्छा है। जिन भाईयों - रिश्तेदारों को हम मारना भी नहीं चाहते वे ही हमारे सामने खड़े है। हम इन्हें मार कर सुख ऐश्वर्य भी नही भोगना चाहते। भगवन् मैं आपका शिष्य हूँ मुझे आप शिक्षा दीजिए मैं क्या करूँ? क्योंकि पूरी पृथ्वी व स्वर्ग का राज्य पाकर भी मैं वह उपाय नहीं जानता जो मेरे दुःख को दूर कर सके। अर्जुन ने युद्ध करने के लिए भगवान श्रीकृष्ण से बिल्कुल मना कर दिया। भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन की ओर देखकर बोले , अर्जुन तूम ना तो अज्ञानी मनुष्यों जैसी बाते करते हो और ना ही बुद्धिमान मनुष्य जैसी, क्योंकि अगर तू आत्मा को जन्मने-मरने वाला समझता है तो जिसका जन्म हुआ है वह जरूर मरेगा। दूसरी तरफ, अगर तू आत्मा को अजर-अमर समझता है तो जो अमर है उसकी मृत्यु नहीं हो सकती।इन दोनों ही स्थितियों में दुःखी नही होना चाहिए। ज्ञानी व बुद्धिमान मनुष्य इन बातों से दुःखी नहीं होते है क्योंकि वह जानते हैं कि जैसे कोई मनुष्य नये कपड़े पहनता है व पुराने हो जाने पर उन कपड़ों को उतार देता है फिर नये पहन लेता है वैसे ही आत्मा भी पुराने शरीर को छोड़कर नये शरीर में चली जाती है मृत्यु शरीर की होती है, आत्मा की नहीं होती । अतः ज्ञानी व धैर्यवान मनुष्य सुख-दुःख ,मान- अपमान, सर्दी-गर्मी को समान मानते है। क्योंकि वे जानते है ये जल्दी नष्ट होने वाले है। इन सबसे ज्ञानी मनुष्य न तो दुःखी होते है और न ही सुखी होते है। ऐसे मनुष्य ही मोक्ष अर्थात् मुक्ति पा लेते है। जगत में सत्य की ही जीत होती है। आत्मा को कोई नष्ट नही कर सकता। इस आत्मा को हथियार द्वारा काटा नहीं जा सकता , आग द्वारा नहीं जलाया जा सकता व जल द्वारा गीला नहीं किया जा सकता है। न ही, हवा द्वारा सुखाया जा सकता है।

जो इस आत्मा को मारने वाला समझता हैं तथा जो मनुष्य इसको मरा हुआ मानते है। वे इन दोनों बातों को ही नहीं जानते है क्योंकि यह आत्मा ना तो किसी को मारता है और ही न किसी दूसरे द्वारा मारा जाता है। शरीर के नष्ट होने पर भी आत्मा नष्ट नहीं होती। जो मनुष्य आत्मा को अजर-अमर मानता है। वह मनुष्य न ही स्वयं मरता है तथा नही दूसरे मनुष्यों को मारता है। इस आत्मा को दोनों तरह से जानकर दुःखी होना ठीक नहीं है। सारे मनुष्य जन्म से पहले बिना शरीर वाले थे और मरने के बाद भी बिना शरीर वाले ही होगें हैं केवल बीच में ही शरीर दिखता है तो इस बारे में क्या सोचना.....

अगर हम धर्म के बारे में भी सोचते हैं तब भी तुझे डर नही लगना चाहिंए क्यों कि धर्मयुद्ध से बढ़कर क्षत्रिय के लिए कोई दूसरा धर्म-कर्त्तव्य नहीं है अगर तुम इस धर्म-युद्ध को नही करोगे तो अपने धर्म से नीचे गिरकर यश को खोकर पाप ही पाओगे। यह अपयश तुम जैसे अच्छे मनुष्यों के लिए मरने से भी ज्यादा बुरा होता है जो लोग अभी तेरा सम्मान करते हैं वे तुझे डरा हुआ मानेंगे, न कहने वाली बातें कहेंगे, तेरी शक्ति की बुराई करेंगे, तेरा अपमान करेंगे। इन सब बातों से अधिक दुःख तेरे लिए क्या होगा? इसलिए युद्ध करना तेरे लिए सभी तरह से अच्छा है क्यों कि तू अगर युद्ध में जीत गया तो पृथ्वी का राज्य मिलेगा। यदि तुझे स्वर्ग तथा पृथ्वी के राज्य की इच्छा न भी हो तो भी अच्छे मनुष्यों की तरह सुख-दुःख, लाभ-हानि, जय-पराजय को समान समझकर युद्ध करना चाहिए क्यों कि युद्ध करने से तुम्हें पाप नहीं लगेगा।

एक कोशिश निवाला प्रतिदिन निःशुल्क भोजन वितरण

निवाल के तहत एस एम एस हॉस्पिटल में भोजन वितरण करते हुए संस्थान के कार्यकृता।

कमलाबाई चैरिटेबल ट्रस्ट की प्रथम व महत्वपूर्ण योजना निवाला 20 जुलाई 2016 को प्रारम्भ हुई। जो आज भी लगातार एस.एम.एस हॉस्पिटल के बागड़ वाले गेट नं.5 पर प्रतिदिन सायं: 6.00 नि:शुल्क भोजन की व्यवस्था की जाती है। इस योजना के माध्यम से प्रतिदिन100 लोगो को नि:शुल्क भोजन करवाया जाता है। और अब तक लगभग 60,000 लोगों की भोजन व्यवस्था करके भोजन करवा चुके है। एस.एम.एस. हॉस्पिटल के अन्दर निवाला की जहा गाड़ी पहुचकर भोजन व्यवस्था होती है। वहा सैकड़ो लोग रोज इस उम्मीद में लाईन लगाकर इन्तजार करते है। कि निवाला की एक गाड़ी आयेगीं और हम सभी को भोजन प्राप्त होगा लेकिन कई बार ऐसा भी होता है। कि वहा बहुत सारे लोग लाईन मे खड़े होते हुऐ भी खाना प्राप्त नही कर पाते हैं लेकिन ट्रस्ट सिर्फ 100 लोगों के भोजन की ही व्यवस्था कर पा रहा है। इस को बड़ाने के लिऐ निश्चित रूप से आप लोगों का सहयोंग रहेगा तो ट्रस्ट जल्दी ही इस भोजन व्यवस्था को 100 से 200 करने का प्रयास कर रहा है। लेकिन यह जब सम्भव है। जब आप लोगो का सहयोग व आर्शीवाद इस ट्रस्ट पर बना रहेंगा। ट्रस्ट की आशा है कि आज भी आप श्री द्वारा दिया गया सहयोंग से जैसे 100 लोगों को निरंतर भोजन मिल रहा है। वैसे ही 200 लोगों की व्यवस्था भी आप सभी के सहयोंग से ही सम्भव है।

"सही निष्ठा सही सोच से ही भाग्य का उदय

एक बार भगवान श्रीकृष्ण और अर्जुन भ्रमण के लिऐ जा रहे थे। जब भगवान कृष्ण और अर्जुन घुमते-घुमते एक जगह देखते है कि एक गरीब आदमी भिक्षा मांग रहा था सायद व्रिप था बहुत ही गरीब था जब उसे अर्जुन ने देखा तो अर्जुन को बहुत दया आई तो अर्जुन ने उस विप्र को पास बुलाया और उसे एक धन की स्वर्ण मुद्राओ से भरी पोटली उसे दे दी और कहा जाओ घर पर आराम करो और आज के बाद भिक्षा मत मागना, विप्र बड़ा खुश होता हे और उत्साह के साथ घर की और जाने लगता है। रास्ते मे विप्र को एक लुटेरा मिल जाता है।

लुटेरा उस का सारा धन लूट लेता हैं और वहां से भाग जाता है। विप्र देव अपनी घर ग्रस्ती चलाने के लिऐ पुन: भ्रमण पर निकलता है। तो विप्र देव को भिक्षा मागते हुऐ देखते है अर्जुन को बडा आश्चर्य होता हैं कि इस विप्र को बहुत सारा धन देने के बाद भी यह विप्र भिक्षा क्यो मांग रहा है। अत: अर्जुन विप्र देव को बुलाता है। और कारण पूछता है। तो विप्रदेव अपनी आप बीती कहानी सुनाता है। अर्जुन को पुन: दया आती है। और अर्जुन विप्र को एक बहुत किमती मोती देता है। और कहता है इसे बाजार में बेच देना इस से आप को बहुत धन मिलेगा और आप धनवान हो जायेंगें। इस के बाद भिक्षा मत मागना क्रमश:विप्र देव बहुत प्रसन्न होता है। और अपने घर की ओर प्रस्थान करता है। घर जाकर मोती को एक पुराने मटके मे रख देता है और सो जाता है। लेकिन उसका दुरभाग्य विप्र का साथ नही छोड़ता है। विप्र की पत्नी नदी से पानी लाने जाती है। तो रास्ते में ठोकर लग कर गिर पड़ती है। गिरने के कारण पानी से भरा मटका टूट जाता है। विप्र की पत्नी दुखी मन से वापस घर आती है। और घर आकर उसी पुराने मटके को उठाकर पानी भरने नदी पर जाती है। और वह जैसे ही पानी भरने लगती है। तो उस मटके में रखा मोती नदी में गिर जाता है। और वह पानी लेकर घर आ जाती है। जब विप्र देव नींद से जागते है। तो अपनी पत्नी से पुछते है। कि वह पुराना मटका कहा है। तो उस विप्र की पत्नी उन्हे सारी घटना बताती है। विप्र छोड़कर पानी के मटके में मोती ढूढ़ने लगता है। लेकिन मोती तो नदी में गिर गया था विप्रदेव व उसकी पत्नी बहुत दुखी होते है। की करोड़ो रूपये मुल्य का मोती तो पानी में गिर गया पुन: विप्रदेव अपनी झोली लेकर भिक्षा के लिऐ निकलता है। उधर कुछ समय बाद भगवान कृष्ण के साथ अर्जुन पुन: भ्रमण के लिऐ निकलते हैं। तो विप्र को वहा ही भिक्षा मागते देखते है। अर्जुन को फिर से बहुत आश्चर्य होता है। अर्जुन जब विप्र से पुछता है। तो विप्र अपनी साथ घटी दुर्घटना का पुरा निवारण देता है। तब भगवान भी कृष्ण विप्र को 2 पैसे देते है। और कहते है। कि जा ये 2 पैसे ले और स्वय को छोड़कर दुसरो के बारे में भी सही दिगाओ निष्ठा के साथ सोचना विप्रदेव वहा से चला जाता है। चलते- चलते विप्र देव सोचता है। कि इन दो पैसे से क्या हो सकता है। इनसे तो घर का रासन भी नही आयेंगा इसी सोच विचार में नदी किनारे किनारे घर की तरफ चलता जा रहा है। अचानक देखता है। कि एक मछुआरा एक मछली जाल में मकड़कर पानी से बाहर ला रहा था मछली पानी से बाहर आने के कारण जीवन व मृत्यु से लड़ रही थी और तड़प रही थी विप्र इस घटना को देखता है। और सोचता है। कि ये इन दो पैसे लो और तो कुछ नही हो सकता लेकिन इस मछली को तो बचाया जा सकता है। वही सोचकर विप्र मछुआरे के पास जाता है। और दो पैसे मछली का मुल्य देकर मछली का छुड़ा लेता है। मछली ली का अपने कमण्ड मे ड़ाल कर नदी में छोड़ने जाता है जब मछली को नदी में नही डालता है। तो वह वही मछली होती है जो विप्र का मोती खा गई थी जब विप्र की पत्नी पानी भरने आई थी मछली मोती को पानी में उगल देती है। विप्र मछली को पानी में छोड़ देता है। और अपने कमण्डल में अपने मोती को देख कर बहुत उत्साहित होता है। और उत्साह में जोर-जोर से चिल्लाता है। कि मिल गया मिल गया उस समय जो लुटेरा था वह भी वहा आ जाता है। विप्र को मिल गया मिल गया चिल्लाता देख लुटेरा सोचता है। कि सायद इसने मुझे पहचान लिया अब यह राजा से मेरी शिकायत करेगा और राजा मुझे दण्ड़ित करेगा यह सोच कर लुटेरा विप्र के चरणो में गिर जाता है। और क्षमा मागता है। कि आप ये सारा धन वापस लेलो। लेकिन अपने राजा से मेरी शिकायत मत करना ऐसा वोल कर सारा धन वापस वही छोड़ कर भाग जाता है। विप्रदेव बहुत प्रसन्न होता है। और उत्साहित मन से घर जाता है। सारी घटना अपनी पत्नी को बताता है। और बड़े आराम से अपना जीवन जीने लगता है।

शिक्षा- जब विप्र ने सिर्फ अपने बारे में सोचा तो उसका दुर्भाग्य उस के साथ था और जब विप्र ने नि:स्वार्थ भाव से सेवा की। तो उस का दुर्भाग्य भी सौभाग्य में परिवर्तित हो गया।

एक कोशिश निवाला प्रतिदिन नि:शुल्क भोजन वितरण

आई केयर

नैत्र जांच व मोतियाबिंद ऑपरेशन

आई केयर

अंधेरे से उजाले की ओर

कमलाबाई चैरिटबल ट्रस्ट द्वारा आयोजित कियें जाने वाले नेत्र जांच शिविर में, अब तक अलग-अलग जगह शिविर आयोजित करके 40 लोगों को नि:शुल्क मोतियाबिंद ऑपरेशन करवाया गया है।

कमलाबाई चैरिटबल ट्रस्ट द्वारा आयोजित नैत्र जाँच व मोतियांबिन्द ऑपरेशन शिविर

कमलाबाई चैरिटबल ट्रस्ट द्वारा नांगल पुरोहितान में आयोजित नैत्र जाँच व ऑपरेशन शिविर

लगभग 987 लोगों की आँखों की जांच की गई साथ ही नजर के चश्में भी नि:शुल्क बांटे गए।

कमलाबाई चैरिटेबल ट्रस्ट की एक योजना है। आई केयर इस योजना के तहत ट्रस्ट के स्वंय सेवक ग्रामीण क्षेत्र में जाते है। और सर्वे करते हैं सर्वे के दौरान बहुत सारे ऐसे बुजुर्ग लोग मिलते है। जो आँखों की विमारी मोतियाबिन्द से ग्रस्त होते है। ट्रस्ट के स्वयं सेवक जब उनसे बात करते हैं तो वो लोग कहते है। कि अब में दृष्ट हो गया हूँ। और वृद्धा अवस्था के कारण आँखों की रोशनी भी कमजोर हो गई है। उन लोगों को पता ही नहीं होता की आँखों में मोतियाबिन्द हो गया। जो जिसका एक छोटें से ऑपरेशन से उपचार हो सकता है। और जो जीवन में अंधेरा हो गया है। वो अंधेरा पुन: रोशनी में तबदील हो सकता है। ट्रस्ट के स्वयं सेवक उन लोगों का समझाकर के इस ऑपरेशन के लिऐं तैयार करते है। ओर साथ ही कुछ लोग ऐसे भी होते है। जिनकों मोतियांबिन्द के बारे में और इस छोटे से ऑपरेशन के बारे में ठीक नही पता हैं। लेकिन उनकी आर्थिक स्थिती ठीक नही है। इसलिए वो लोंग चाहतें हुए भी अपना इलाज नहीं करवा पातें उन लोगों को भी केम्प में इलाज करवाने के लिए जागरूक किया जाता है। इस प्रकार सर्वे का पूर्ण विवरण संस्थान के पद्धाधिकारी को प्राप्त होता है। और पद्धाधिकारी सर्वे की रिर्पोट को देखते हुए किसी भी गाँव को चिन्हीत करके वहाँ पर नि:शुल्क मोतियाबिन्द ऑपरेशन कैम्प लगाने की योजना बनाकर के एक तिथि निर्धारित करते है। शिविर के दौरान वरिष्ठ चिकित्सकों द्वारा सभी लोगों के आँखों की जाँच होती है। नि:शुल्क दवाईयाँ दी जाती है। चश्में वितरण किए जातें है। साथ ही जिन लोगों को मोतियाबिन्द से पिड़ित पाया जाता है। उनकों हॉस्पिटल में लाकर उनका नि:शुल्क ऑपरेशन करवाय जाता है। इस श्रंखला में अब तक 52 पीड़ित लोगों का ऑपरेशन करवाय गया है। 500 लोगों का चश्में वितरण किए गए और 1500 लोगों ने नि:शुल्क दवाई प्राप्त करकें आँखों की बिमारी में लाभ उठाया।

महापुरूषो की जीवनी

ज्योति से ज्योति जलाओ

ईश्वर चन्द्र विद्यासागर

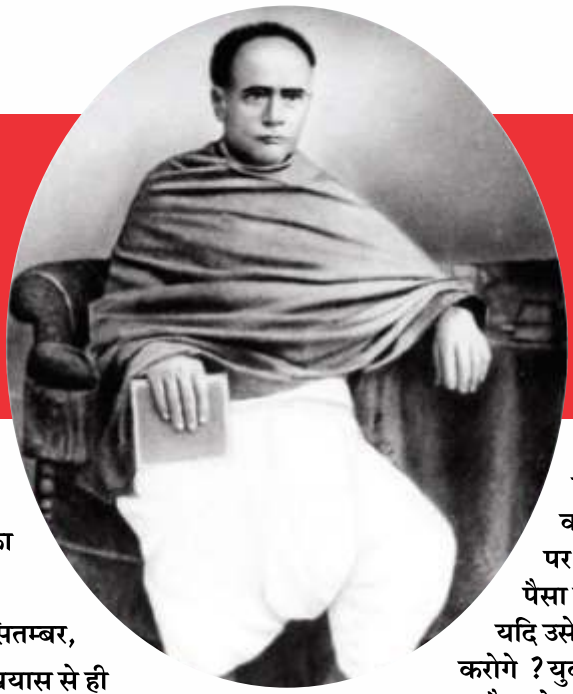

परिचय- महान समाज सुधारक,मानवतावादी, शिक्षाशास्त्री, दार्शनिक के बचपन का नाम ईश्वर चन्द्र विद्यासागर वन्धोपाध्याय था। इनका जन्म 26 सितम्बर, 1820 को पं.बंगाल में हुआ। इनके प्रयास से ही 1856 ई. में विधवा-पुनर्विवाह कानून पारित हुआ। ये नारी-शिक्षा के समर्थक व बाल-विवाह के घोर-विरोधी थे। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर कलकत्ता में अध्यापन कार्य करते थे वेतन का उतना ही अंश घर-परिवार के लिए खर्च करते जितने में कि औसत नागरिक स्तर का गुजारा चल जाता। शेष भाग वे दूसरे जरूरत मंदों की, विशेषकर तथा छात्रों की मदद किया करते थे जीवन-भर उन्होंने ये संकल्प रखा। वे गरीबी में पढ़े थे जिसका उन्हें अनुभव था ।

एक दिन वे कहीं जा रहे थे एक उदास व हताश युवक ने भिखारी के जैसे उनसे पैसा मांगे। विद्यासागर जी दानी व उदार तो थे पर वे उचित पात्र का परीक्षण किए बिना किसी की ठगी में न आते थे। युवक से जवानी में हट्टे-कट्टे होते हुए भी भिक्षा मांगने का कारण पूछा। सारी स्थिति जानने पर मांगने का औचित्य लगा, सो एक पैसा तो दे दिया पर उसे रोक कर पूछा कि यदि उसे अधिक पैसे मिल जाएं तो क्या करोगे ? युवक बोला, यदि एक रूपया मिले तो उसका सौदा लेकर गलियों में फेरी लगाने लगूंगा और अपने परिवार का भरण-पोषण करने में स्वावलम्बी हो जाऊंगा। विद्यासागर जी ने एक रूपया और दे दिया। उसे लेकर उसने छोटा व्यापार आरंभ कर दिया। काम दिनों-दिन बढ़ने लगा कुछ समय बाद वह युवक बड़ा व्यापारी बन गया।

एक दिन विद्यासागर जी उस रास्ते से निकल रहे थे कि व्यापारी दुकान से उतरकर उनके चरणों में आकर पड़ा और दुकान दिखाने लगा और कहा, यह आपका दिया एक रूपया पूंजी का चमत्कार है। विद्यासागर जी प्रसन्न हुए और कहा, जिस प्रकार तुमने सहायता प्राप्त करके उन्नति की उसी प्रकार अपनी सामर्थ्य के अनुसार अनेक जरूरतमंदों की सहायता करते रहना, व्यापारी ने वैसा ही करने का वचन दिया।

लघु कथा

एक बच्चा फटे पुराने जूतो के साथ गेंद से खेल रहा था। लागों को उसके जूते देख कर बहुत दुख हुआ। तभी किसी सज्जन ने बाजार से नया जूता खरीदा और उसे देते हुए कहां, बेटा लो... ये जूते पहन लो, लडके ने तुरन्त जूते निकाले व पहन लियें। उसका चहरा खुशी से दमक उठा था। वो मेरी तरफ पलटा और मेरा हाथ थाम कर पुछा क्या आप भगवान है ? उसने घबराकर हाथ छुडाया और कानो के हाथ लगा कर कहा नहीं नहीं बेटा मैं भगवान नहीं हूँ। लडका फिर मुस्कुराया और कहां तो जरूर आप भगवान के दोस्त होगें क्योंकि मेने कल रात भगवान से कहा था कि मुझे नऐ जूते देदो और वह सज्जन मुस्कुरा दिया अब वो सज्जन भी जान चुके थें। भगवान का दोस्त होना कोई मुश्किल काम नहीं है... और हम ????

एक कोशिश निवाला प्रतिदिन निःशुल्क भोजन वितरण

सफाई अभियान
स्वच्छ रहें.., स्वस्थ रहें..!

स्वचछता हमारें जीवन को स्वच्छ रखनें के लिए और हमारें जीवन स्तर को बनाएं रखनें के लिए हमारी व हमारें आस-पास के खाली जगह, सड़क, कार्यक्षेत्र, पर्यावरण की स्वच्छता, नदी, तालाब और स्वंम स्वच्छ रखना अतिआवश्यक है।

स्वच्छता एक ऐसा कार्य है। जिसे हमें हमारें व सम्पूर्ण स्वच्छता स्थर को बनाएं रखनें के लिए आवश्यक है। हमारें जीवन में अगर हमनें स्वच्छता का ध्यान नही रखा तो हमारें आस-पास का वातावरण व वायुमण्ड़ल भी दूषीत हों जाएंगा। और आगें चलकर इस के प्राणीजीव बहुत ही खराव होगें जों इससे महामारी चेचक, केन्सर, दमा, डेंगू अन्य कई प्रकार की विमारीय हमें घेर लेती है। जिसें हमें शारिरिक के अलावा आर्थिक नुकसान भी होता है। आज हिन्दुस्तान में प्रधान मंत्री जी के लाल किला की प्रसिद्धि से पहला भाषण देते हुऐं घोषणा की थी अगर हम स्वच्छता का ध्यान रखेगें तो एक दिन हिन्दुस्तान भी इतना सुन्दर लेगा जब कोई विकसित देश का कोई पर्यटक हिन्दुस्तान घूमकर जाऐगा तो वहा हिन्दुस्तान के बारे में बतायें की हिन्दुस्तान भी एक स्वस्थ देश है। इसी विचारधारा को ध्यान में रखकर कमलाबाईचैरिटेबल ट्रस्ट ने एक सफाई अभियान के लिऐं एक स्वंय सेवको की टीम का गठन किया गया इस टीम में लगभग 150 स्वंय सेवक है। जो जयपुर शहर के कई स्थान को चिन्हित करके सुबह 7 से 9 बजें तक सफाई अभियान चलाते है। जिससे हमारें देश स्वच्छ रहे और स्वस्थ रहे हमारें देश में हमारे देश हमेंशा विमारी से बचें रहतें है। कमलाबाईचैरिटेबलट्रस्ट हमेशा नवयुवको ने सफाई अभियान के लिऐं जागरूकता फेलाता है। व सफाई के प्रति जागरूकता रहता है।

स्वामी विवेकानंद

स्वामी विवेकानंद-वेदान्त के विख्यात एवं प्रभावशाली आध्यात्मिक गुरू जिनका बचपन का नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था इनका जन्म 12 जनवरी,1863 को कोलकाता में हुआ था। शिकागो (अमेरिका) में सन् 1893 में आयोजित विश्वधर्म महासभा में भारत की ओर से सनातन धर्म का प्रतिनिधित्व किया था स्वामी जी का जन्मदिन युवा-दिवस के रूप में मनाया जाता है क्योंकि उन्होंने युवाओं को कर्म करने की प्रेरणा दी और कहा, ''उठो, जागो तथा तब तक न रूको, जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो। भारत का वेदान्त अमेरिका व यूरोपीय देशों में स्वामी जी की वक्तृता के कारण ही पहुंचा। उन्होंने राम कृष्ण मिशन की स्थापना की थी जो अपना काम आज भी कर रहा है। उन्हें प्रमुख रूप से उनके भाषण की शुरूआत ''मेरे अमेरिकी भाइयों एवं बहनों '' के साथ करने के लिए जाना जाता है। उनके संबोधन के इस प्रथम वाक्य ने सबका दिल जीत लिया था।

भ्रमण व भाषणों से थके हुए स्वामी जी अपने निवास स्थान पर लौटे। उन दिनों वे अमेरिका में एक महिला के यहां ठहरे हुए थे वे अपने हाथों से भोजन बनाते थे। एक दिन वे भोजन की तैयारी कर रहे थे कि कुछ बच्चे उनके पास आकर खड़े हो गए। बच्चे भूखे थे। स्वामी जी ने अपनी सारी रोटियाँ एक-एक कर बच्चों मे बांट दी महिला वहीं बैठी सब देख रही थी उसे बड़ा आश्चर्य हुआ आखिर उससे रहा नहीं गया और उसने स्वामी जी से पूछ ही लिया-'आप ने सारी रोटियाँ उन बच्चों को दे डाली, अब आप क्या खाएंगे' स्वामी जी के अधरों पर मुस्कान दौड़ गई। उन्होंने प्रसन्न होकर कहा-मां, रोटी तो पेट की ज्वाला शांत करने वाली वस्तु है। इस पेट में न सही,उस पेट में ही सही। लेकिन देने का आनंद पाने के आनंद से बड़ा होता है।

> "उठो जागो और
> लक्ष्य तक मत रूको
> कामनाएँ समुद्र की भाँति अतृप्त हैं।
> पूर्ति का प्रयास करने पर उनका
> कोलाहल और बढ़ता है।"

-स्वामी विवेकानंद

एक कोशिश निवाला प्रतिदिन निःशुल्क भोजन वितरण

वृक्षा रोपण

जिन वृक्षो के नीचे बैठकर ऋषियो ने ईश्वरीय ज्ञान प्राप्ति की, और हमारे सामजिक जीवन की रूपरेखा बनाई, वन के बीच आश्रमों के जिन वृक्षो के नीचे गुरूकूलों में राष्ट्र के कर्णधारो, राजाओं , अमात्यों, राज-गुरूओं, राजनीतिज्ञों, विद्वानों , दर्शानिको एक कलाकारों का निमार्ण किया गया। जो वृक्ष उन गुरूकूलो की भोजन व्यवस्था, छाया तथा निर्माण-सामग्री के सावक बने, उन वृक्षो का महत्व समान पाप है।

वृक्षों का महत्व बतातें हुऐ विष्णु-स्मृति में वर्णन किया गया है।(वृक्षारोपति तु वृक्षाः परलोकें पुत्रा। वृक्षोप्रदो वृक्ष प्रसूनैदेधान् प्रीणाचति फलेश्चातिधीन् छाययाभयागतान् , देवे वर्ष न्युदकेन पितृान। पुष्प प्रदानेन श्रीमान् भवति। कृपाराम तड़ागेषु देवता यतनेषुय पुनः स्वकार कर्ता च लभते मौलिक फलम्)। अर्थात जो मनुष्य वृक्ष लगाता है।वे वृक्ष परलोक में उसके पुत्र बनकर जन्म लेते है। वृक्षो का दान देने वाला उसके फूलों से देवताओं को प्रसन्न करता है। फलो द्वारा अतिथियों को सन्तुष्ट करता हैं। वर्षा में छाया द्वारा पथिक को सुख देता है। तथा जल द्वारा पितरों को प्रसन्न करता हैं इस प्रकार वृक्षारोपण तथा पोषण के आघ्यात्मिक महत्व को समझतें हुए तथा पर्यावरण को ध्यान में रखते हुऐं कमलाबाई चैरिटेबल ट्रस्ट ने सन् 20 जुलाई 2017 में इस पुनितः कार्य को करने की शुरूआत की चैरिटबल ट्रस्ट ने अभी तक 2000 हजार वृक्ष लगाकर पर्यावरण को स्वच्छ रखने की दिशा में कार्य प्रारम्भ किया जो हर साल वर्षा ऋतु में लगातार जारी रखा जाता है ताकि हमारा पर्यावरण शुद्ध और स्वच्छ रहें समयानुसार पुर्ण रूप से इन्द्रभगवान अपना योगदान बारिश के रूप में करते रहें ताकि हमारें प्रत्येक जीव मात्र को जल-समृद्धि भी बनी रहें। साथ ही हम आनें वाली पीढ़ी को स्वच्छ हवा में सास लेने के लिऐं उनयुक्त पर्यावरण दे के जाए आर हमारें भारत का इतिहास विश्व पर्यावरण के लिए एक वरदान सावित हो।

ट्रस्ट द्धारा वृक्षारोपण कार्यक्रम में पधारें वार्ड नं. 17 के पार्षद मधु शर्मा

मोक्षधाम में वृक्षारोपण करते हुए ट्रस्ट के पदाधिकारी एवं पार्षद महोद्या

कहानी

नसीहत

एक बार एक दोलतमंद आदमी अपनी बृद्धा अवस्था क समय अपने बेटे को बुलाया ओर अपनी सारी जायदाद, मकान, दुकान, नकदी सब की एक वसीयत देते हुऐ कहा बेटा अब मेरा तो अन्तिम समय आ गया है। मैं अब सभी कुछ छोड़कर कभी भी भगवान के पास जा सकता हूँ अत: मेरी एक आखरी इच्छा है कि जब मेरी मृत्यु हो तो मेरी मृत्यु के बाद मेरे फटे हुऐ जुराब मुझे पहना देना पिता ने पुत्र को वसीयत के सात फटे हुऐ जुराब देते हुऐ कहा मेरी यह इच्छा जरूर पुरी करना। कुछ समय बाद पिता की मोत हो गई और उसने पंडित जी को बोला जो अन्तिम संस्कार करवाने आया की मेरे पिता जी की आखरी इच्छापुरी करनी है। पंडित बोला की हमारे समाज व धर्म मे तो कुछ भी पहनाने की इज्जात नही है, पर बेटे ने जिद रखी की ये पिता जी की आखरी इच्छा है, इस विवाद को लेकर बहस इतनी बड गई की शहर के महान विद्धवान पंड़ित वहा जमा हो गये आखिर यह निर्णय हुआ की नही पहना सकते इसी माहौल में एक आदमी आया और पिताजी का लिखा एक खत पुत्र को दिया जिसमें पिता जी द्वारा लिखित कुछ नसीहत थी

मेरे प्यारे बेटे देख रहे हो दोंलत, बंगला, गाड़ी, और बड़ी-बड़ी फैक्ट्री मील काय हाउस सब बनाया, खूब कमाया लेकिन आज मुझे एक फटा जुराब मेरे साथ ले जाने की इजाजत नही है ये फटा जुराब भी मेरे साथ नही जा सकता, एक दिन तुम्हे भी मृत्यु आयेगी यह शाश्वत सत्य है। आगाह हो जाओ तुमे भी एक सफेद कफन में ही जाना पड़ेगा साथ कुछ नही ले जा पाओगें। लिहाजा कोशिश करना पैसे के लिऐ किसी को दु:ख मत देना, गलत तरीके से पैसे नही कमाना, धन को धर्म व सेवा कार्यो मे हि लगाना सबको पता है। की मृत्यु के बाद सिर्फ कर्म ही साथ जाते है। फिर भी आदमी धन के पिदे भागता रहता है। जब तक उसका निधन नही हो जाता है।

1 जो आपसे दिल से बात करता हो उसे कभी भी दिमाग से जबाब नही देना।

2 एक साल मे 50 मित्र बनाना आसान है। लेकिन 50 वर्ष तक एक ही मित्र से मित्रता निभाना खास बात है।

3 इन्सान एक दुकान है, और जुबान उसका ताला जब जुबान रूपी ताला खुलता है। तो पता चलता है। कि इन्सान उसी दुकान में कितना और कैसे सामान है।

निवाला टीम द्वारा ग्रामिण क्षेत्र में भोजन सामग्री वितरण करते हुए संस्थान के पदाधिकारी ।

बीमारी से पीड़ित वद्धा को स्वास्थ्य उपचार हेतु सहयोग के लिए चैक प्रदान करते हुए संस्था टीम।

परिण्दा अभियान

परिण्दा अभियान
थोड़ा सा पानी, थोड़ा सा दाना। सबको मिलकर है पहुँचाना।।

कमलाबाई चैरिटेबलट्रस्ट द्वारा चलाया जा रहा अभियान परिण्दा है। अभी कुछ महिनें बाद ही भयंकर गर्मी का मौसम आने वाला है। गर्मी के मौसम में आती है। तो वो है। बेजुबान पक्षी को अगर कोई समस्यां होती है। इन्सान तो बोलकर अपनी समस्या बयां कर सकता है। लेकिन यह बेजुवान परिन्दे तो अपनी बात भी नही बता सकते है। इसलिऐं हम इन्सानों की जिम्मेदारी और भी बड़ जाती है। कि यह पक्षी भी अन्य जैसे नदी पेड़, पौधो, पर्वत, पर्यावरण का अंग है। वैसे ही वेजुबान पक्षी भी पर्यावरण का अभिन्न अंग है। साथ गर्मी के मौसम में प्यास की वजह से लगातार इन की मौत होती रहती है। इस दिशा में कार्य करना इन्सानीयत का धर्म है। हमें मिलकर इन जीवों पर दया करना इन जीवों पर दया रखनी चाहिऐ इसी सोच से प्रेरित होकर ट्रस्ट परिवार ने कुछ विषेश प्रकार के परिण्दे पक्षीयों के लिए डिजायन करवायें है। जिसमें ट्रे होती है। एक में तो पानी की व्यवस्था होती है। और उसी में दाने की व्यवस्था होती है। गर्मी के मौसम में ट्रस्ट के स्वंय सेवक शहर के पार्क, जंगल, जहा पक्षीयों के लिऐं दानापानी की व्यवस्था नही होती है। परिण्दे लगातें है। ताकि इन बेजुवान पक्षियों को भुख व प्यास के कारण मोत से बचाया जा सके इसी समस्या में अब तक ट्रस्ट ने 1000 परिण्दे शहर व ग्रामीण क्षेत्र में लगायें है।

ट्रस्ट द्वारा नांगल सिरस गांव में परिन्दे लगायें गये।

सेन्ट्रल पार्क, जयपुर में परिन्दा लगाते पदाधिकारी

परिन्दा अभियान में पधारें ज्योती नगर थाने के थानाधिकारी

गलतफेमियां

एक समय की बात है। एक सन्त पात: काल भ्रमण हेतु समुद्र के तट पर पहुचा। समुद्र के तट पर उस ने एक पुरूष को देखा जो एक स्त्री की गोद में सर रख कर सोया हुआ था पास में शराब की खाली बोतल पड़ी थी संत बहुत दु:खी हुआ उसने यह विचार किया कि यह मनुष्य कितना तामसिक और विलासी है। जो प्रात: काल शराब सेवन करके स्त्री की गोद में सर रख कर प्रेमालाप कर रहा है।

कुछ समय बाद समुद्र से बचाओं बचाओ की आवाज आई, संत ने देखा एक मनुष्य समुद्र में डूब रहा है। मगर संत स्वय तैरना नही जानता था इस लिऐ उस मनुष्य को डुबते हुऐ देखने के अलावा कुछ नही कर सकता था इतने में ही स्त्री की गोद में सर रखकर सोया हुआ आदमी उठा और डूबने वाले आदमी को बचाने के लिऐ पानी मे कूद गया थोड़ी देर मे ही उसने डूबने वाले को बचा लिया और किनारे ले गया अब संत विचार में पड़ गया की इसे बुरा कहे या भला, संत उसके पास गया और बोला तुम कौन हो भाई और यहां क्या कर रहे हो।

उस व्यक्ति ने उत्तर दिया में एक मछुआरा हूँ। मछली पकड़ने का काम करता है। आज कई दिनों बाद समुद्र से मछली पकड़ कर प्रात: जल्दी यहां लौटा हूँ।

मेरी माँ मुझे लेने के लिऐ आई थी और साथ में घर में कोई बर्तन नही होने के कारण इस मदिरा की बोतल में पानी ले आई। कई दिनों से थका हुआ था तो भोर के सुहाने वातावरण में पानी

पिया और थकान कम करने के लिऐ एक बार माँ की गोद में सिर रखकर सो गया।

संत की आखों में आसू आ गए की में कैसा पातक आदमी हूँ। मेने सिर्फ जौ देखा और बिना विचार किऐ हि अनुमान लगा लिया की यह आदमी गलत ही है। कोई भी बात जो हम देखते है। वैसी नहीं होती उसका दूसरा पहलू भी हो सकता है। किसी के प्रति कोई निर्णय लेने से पहले सौ बार सोचना चाहिए। तब निर्णय लेना चाहिऐ।

ख्याति नदी की भाँति अपने उद्गम स्थल पर क्षीण ही रहती है
किंतु दूर जाकर विस्तृत हो जाती है।

-भवभूति

R Jai Enterprises

Full Catering Service
All Type of Ice-Creams
Desi Cow Ghee

9829017138 / 9828075561
E-mail : rjaienterprises@gmail.com

निवाला सेवा आश्रम

हमारें समाज में वृद्धों को सम्मान का प्रात्र बताया गया है। परमात्मा की परम कृप्या से माता-पिता दुनिया की सबसें बड़ी नेमतों में से एक हैं वृद्ध माता-पिता हमारें समाज के स्तंभ है। लेकिन आज प्राश्चात्यकरण के कारण हमारें ये स्तंभ गिरतें जा रहें है। पहले एक कहावत होती थी की दो माता- पिता मिलकर दस बच्चों को पालतें है। लेकिन दस बच्चें मिल कर भी दो माता-पिता को नहीं पाल सकते। ऐसा क्यों हो गया है ? संयुक्त परिवार हमारी परम्परा रही है। लेकिन आज के दौर में यह टूट सी गई है। और हमारी भावना एकल परिवार में परिवर्तित हो गई । इससे हमारी अन्दर जों वृद्धों को लेकर इज्जत, सम्मान था वह चला गया है। उम्र के इस पड़ाव में पहुचकर हमारें बुजुर्ग अपनें आप को अलग-थलग सा महसूस करने लगे है। और संवेदन हिनता के इस दौर में अपने ही इनकी भवनाओं को समझनें में नाकाम होने लगते है। जब शरीर पर झुरियाँ पड़ गई है। चलनें फिरनें की समस्या हों जाती है। दाँत टूट जातें है। दृष्टि नष्ट हो जाती है। पत्नी और पुत्र भी अलग तरह से व्यवहार करनें लग जातें है। वर्तमान में अधिकांश वृद्ध दु:खी व तनाव ग्रस्त रहने लगे है। जो माता-पिता अपना खून पसीना बहाकर अपने परिवार को पालतें है। पेट काटकर अपनें बच्चों को पालते है। और सोचते है। कि वृद्धा अवस्था में हमारा सहारा बनेगें। लेकिन व निराश है। उन्हें ये सेवाऐं नहीं मिलती है। बेटे को पालाना उनका कर्तव्य था यह कोई निवेश नहीं है। हमारे ऋिषी मुनियों ने भी इन परिस्थिती को समझनते हुऐं वानप्रस्थ व सन्यास आश्रम की व्यवस्थाऐं की थी। जो पूर्ण रूप में उचित थी लेकिन आज हम लोग हमारी बनाई हुई व्यवस्थाओं को भूलतें जा रहें है। वानप्रस्थी का कर्तव्य होता है। की वह समाज की बुराईयों को मिटाऐं तथा समाज में वैदिक ज्ञान के प्रचार प्रसार में अपना योग दान दे और वानप्रस्थ के साथ ही सन्यास आश्रम की योजना भी बन जाती है। हमारे ऋिषी मुनियों ने हमारी सनातन संस्कृती को योजनाबद्ध बनाई थी लेकिन आज हम स्वंय ही सनातन की व्यवस्थाओं को भूलते जा रहें है। इसी का प्रमाण है। कि आज देव तुल्य वृद्धों का सम्मान चला गया। दर दर की ठोकर खा रहें है। आज भी जरूरत है। हमारें समाज की सनातन संस्कृती को मानने की, जानने की, और जीवन में अपनानें की आवश्यकता है। वानप्रस्थ अवस्था आनें पर हमारें जीवन में अपनें आप कुछ बदलाव आने चाहिऐ। सन्यास आश्रम की अवस्था आनें पर भी हमें जीवन जीने की शैली को बदलना है। ताकि हमारे बड़े बुजुर्ग का सम्मान कायम रह सके आज परिवार आर्थिक रूप से तो सक्षम है। लेकिन हमारे सनातन संस्कृति को व सनातन संस्कारों को भूल गये है। इसी वजह से बुजुर्ग की हालत दयनिय है। हमें जरूरत है। कि हम हमारी सनातन संस्कृति को याद रखे और बुजुर्गो का सम्मान करे, उनकी सेवा करें, बुजुर्ग ही हमारें भगवान है। इसी विचारधारा को समझतें हुऐ कमलाबाई चैरिटेबल ट्रस्ट ने अपने आगामी सेवा प्रकल्पों में एक वृद्धा आश्रम की योजना बनाई है। जिसमें बुजुर्ग लोगों का ध्यान रखा जायेगा व शान्तिमय माहौल में पूरे मान-सम्मान से अपना जीवन जीयेंगे, साथ ही हमारी सनातन संस्कारों के साथ अनाथ बच्चों को भी वहाँ रखने की योजना है। जिनसे हमारे बुजुर्ग लोगों का अर्शीवाद व संस्कार उन बच्चों को भी मिल सकें ।

संस्थान समाचार

संवारे बचपन के दोरान ग्रामिण सर्वे में ट्रस्ट के सचिव मदन चौधरी एवं अन्य सदस्य।

बालिकाओं को शिक्षा सामग्री प्रदान की।

समाज सेवी कल्यान जी कव्या द्वारा गरीब छात्राओं को अर्थिक सहायता प्रदान करते हुए।

बालिकाओं को शिक्षा सामग्री प्रदान की।

ट्रस्ट द्वारा आयोजित श्रीमद भागवत कथा की पूर्ण आहुति हवन करते हुए सदस्य।

संवारे बचपन के तहत आर्थिक सहायता प्रदान करते ट्रस्ट के पदाधिकारी।

बालिकाओं को स्कूल ड्रेस प्रदान करते हुए समाज सेवी पी के गोयल साहब एवं ट्रस्ट के पदाधिकारी।

पोषबड़ा महाउत्सव में दानदाताओं का सम्मानित करते हुऐं कमलाबाई चैरिटबल ट्रस्ट के पदाधिकारी

पद्धाधिकारी

निवाला परिवार दृष्टिहिन बच्चों को मिले व उन्हें खाना खिलातें हुऐ।

श्री श्री 1008 श्री चेतन दास जी महाराज का आर्शीवाद प्राप्त किया निवाला टीम ने।

कमलाबाई चैरिटेबलट्रस्ट द्वारा निवाला योजना के माध्यम से एस.एम.एस हॉस्पिटल के अलावा भी यहा भोजन की आवश्यकता होती है। भोजन पहुचाने का प्रयास करता रहता है। इसी श्रृंखला में अनाथ आश्रम के बच्चा को खाना खिलाऐं।

दर्शन सेवा

कमला बाई चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा नि:शुल्क खाटु श्याम यात्रा 30/8/2017 को प्रारम्भ किया इस अवसर पर ट्रस्ट परिवार में सभी सदस्य व पदाधिकारी उपस्थित रहें साथ ही बाबा श्यामके भक्तों ने पूरे हर्ष व उल्लास के साथ खाटु की यात्रा की व बाबा के दर्शन का लाभ उठाया साथ ही खाटु में ही सभी भक्तों की नि:शुल्क भोजन प्रसाद की व्यवस्था की गई इस यात्रा समाज सेवी श्रीमान् कैलाश जी अग्रवाल ने हरी झण्डी दिखा कर रवाना किया। संस्थान के सचिव श्रीमान् मदन चौधरी ने सभी बाबा के भक्तों को यात्रा की शुभ कामना देते हुए घोषणा की कि यह नि:शुल्क यात्रा प्रत्येक माह की शुक्लपक्ष की नवमीं को ही जाऐगी।

स्कूल के बच्चों को संस्थान के सेवा प्रकल्पों की जानकारी देते हुऐ संस्थान के सचिव श्रीमान् मदन जी चौधरी

सहयोगी हाथ

संरक्षक

श्रीमान
शंकर लाल जी अग्रवाल

श्रीमान
शंकर लाल जी अग्रवाल

श्रीमान
शंकर लाल जी अग्रवाल

एक कोशिश
निवाला
प्रतिदिन निःशुल्क भोजन वितरण

खाली पेट न खायें ये चीजे

7-8 घंटे की नींद लेने के बाद सुबह खाली पेट क्या खाना चाहिए और क्या नहीं, इस बारे में सबको पता होना चाहिए, क्योंकि खाने में ऐसी बहुत सी चीजें है जो खाली पेट हमारे शरीर को काफी नुकसान पहुंचाती हैं । हम उन्हें खाते तो फायदे के लिए है लेकिन वे हमारे शरीर के लिए नुकसानदेह होती हैं।

चाय

सुबह उठते ही चाय की चुस्कियां लेने वाले लोगों को चाय में मौजूद केफीन से एसिड़ बढ़ता है जिससे पाचन तंत्र में समस्या हो सकती है।

केला

खाली पेट केला खाने से शरीर में मैग्नीशियम की मात्रा बढ़ जाती है जिससे शरीर में कैल्शियम और मैग्नीशियम की मात्रा असंतुलित हो जाती है।

मिर्ची

कभी भी खाली पेट मिर्च या काली मिर्च खाने से गैस की समस्या हो सकती है। इससे सीने में जलन भी हो सकती है तथा पाचनतंत्र को नुकसान पहुंचाती हैं।

टमाटर

टमाटर में एसिड बहुत अधिक मात्रा में होता है। खाली पेट टमाटर खाने से पेट में पथरी बन सकती है इसलिए इसका खाली पेट सेवन ठीक नहीं है।

दवाइयाँ

टमाटर में एसिड बहुत अधिक मात्रा में होता है। खाली पेट टमाटर खाने से पेट में पथरी बन सकती है इसलिए इसका खाली पेट सेवन ठीक नहीं है।

अन्य चीजें

मसाला

मसालेदार या चटपटा भोजन – कभी भी खाली पेट मसालेदार या चटपटा भोजन न करें क्योंकि इससे प्राकृतिक एसिड होता है। जो पेट के हाजमे को बिगाड़ देता है।

खट्टे फल

खट्टे फल– खट्टे फलों में फ्रूट एसिड होता है। खाली पेट खट्टे फल खाने से पेट में एसिडिटी होती है और गैस्ट्रिक अल्सर होने का खतरा भी रहता है खट्टे फलों में फाइबर और फ्रैक्टोज होने के कारण पाचन क्रिया धीमी हो जाती है।

एक कोशिश निवाला प्रतिदिन निःशुल्क भोजन वितरण

स्वयंसेवक

आनंद तिवारी
आदित्य नाथावत
अलताफ हुसैन
अमरचंद जाँगिड़
अमित जैन
अमित रॉय
अनील जैन
अनुज खण्डेलवाल
आशीष जाँगिड़
अशोक जाँगिड़
अशोक सामोता
अशोक स्वामी
अतुल शर्मा
आशिष पारीक
भगवान जाँगिड़
बल्लभ अग्रवाल
भवानी सिंह शेखावत
ब्रजराज गोतम
चेतन जाँगिड़
चावणराम मीणा
दीपक शर्मा
दिपेश जाँगिड़
दीलिप सिंह राठौड़
देवेन्द्र कुमावत
देवकी नंदन जाँगिड़
धनराज धाधीच
धर्मेंद्र जाँगिड़
दीलीप जाँगिड़
दिनेश जाँगिड़
दिनेश वर्मा
गयाप्रसाद जाँगिड़
घनश्याम महावर
गजानंद जाँगिड़
गौतम शर्मा
गोवर्धन कुमावत
हिरालाल जाँगिड़
हेमेन्द्र सिंह
जहीर शेख
जितेन्द्र कटारीया
जितेन्द्र परीहार
जितेन्द्र शर्मा
जितेन्द्र विजय
कमलराज जाँगिड़
किशन पुरी
किशन यादव
कुलदीप शर्मा
लोकेश जाँगिड़
मानव रंकावत
मनिष गोयल
मनमोहन खण्डेलवाल
मनोज जाँगिड़
मनोज कुमावत
मोहित शर्मा
मोनु जाँगिड़
मुकेश ढाका
मुकेश जाँगिड़
मुकुट बिहारी जाँगिड़
मुलचंद कुमावत
नरेन्द्र कुमार शर्मा
नरेन्द्र शर्मा
नरेन्द्र जाँगिड़ (नीलू)
नीरज जाँगिड़
नितीन जाँगिड़
पंकज सिनसिनबार
पप्पु चौधरी
पवन शर्मा
प्रदीप शर्मा
प्रदीप यादव
प्रमोद चौहान
पृथ्वी सिंह
पवन पुरी
पंकज जाँगिड़
आर. बैंकटेश
राहुल सिंह
राजेन्द्र जाँगिड़
राजेश जैन
रमेश शर्मा
राजकुमार शर्मा
राजकुमार वर्मा
राजपाल जाँगिड़
राजु कुमावत
राकेश शर्मा
रामप्रकाश चौधरी
रामअवतार जाँगिड़
रमेश सब्बल
रंगेश शर्मा
रंगपाल सिंह
रतन सिंह जाँगिड़
रावत जी
रमाकांत शर्मा
रोहित जैन
एस. एस राठोड़
शिवम् पारीक
शैलेन्द्र सिंह
समीर जाँगिड़
सलीम खान
शंभु जी
संदिप सिंह शेखावत
संजय शर्मा
सतीश कटारीया
सत्यनारायण शर्मा
सिधार्थ जी
सुमित गोयल
सुरज चौपड़ा
उदय सिंह सैनी
वरूण शर्मा
विजय पंथ
विनोद जाँगिड़
विक्रम सिंह
विष्णु पुरी
विष्णु प्रताप सिंह
योगेश जाँगिड़
युनुस खान

एक कोशिश निवाला प्रतिदिन निःशुल्क भोजन वितरण

निस्वार्थ सेवा में समर्पित

ट्रस्ट के स्वयं सेवक

ट्रस्ट की महिला स्वयं सेवक

कमलाबाई चेरिटेबल ट्रस्ट

कमलाबाई चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा स्वच्छ भारत अभियान

कमलाबाई चैरिटेबल ट्रस्ट व वार्ड नंबर 14 की टीम की ओर से आज संस्कार स्कूल लिंक रोड, सिरसी रोड पर महात्मा गाँधी जी के स्वच्छ भारत अभियान के तहत मिलकर सफाई कार्य

केंद्रीय बस स्टैंड सिन्धीकैम्प में कमलाबाई चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा किया स्वच्छ भारत अभियान का प्रारम्भ

जयपुर : कमलाबाई चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा किए जा रहे सामाजिक कार्यों को निरंतर गति देते हुए ट्रस्ट मण्डल ने वार्ड नं 14 के पार्षद श्री

पक्षियों के लिए बांधे परिंडे

सिटी रिपोर्टर : कमलाबाई चैरिटेबल ट्रस्ट की ओर से रविवार को विद्याधर नगर स्थित केशव पार्क में पक्षियों के लिए 'परिंडे अभियान' की शुरुआत की गई। [illegible] दिन तक चलने वाले इस अभियान में विद्याधर नगर और शास्त्री नगर में परिंडे लगाए जाएंगे। इस अवसर पर [illegible], वार्ड नं. 9 के पार्षद [illegible] विद्याधर नगर के [illegible], सामाजिक कार्यकर्ता [illegible] उपस्थित रहे।

सीनियर सिटीजंस के लिए बनाई एप

आप श्री से सहयोग की अपेक्षा

।। जय श्री कृष्णा ।।

पुष्पप्रद निवेदन अनुरोध

संस्थान के सभी, पुण्यशील एवं दानवीर भामाशाहों और करुण हृदय हितेषियों को सुचित करते हुए प्रसन्नता है की कमलाबाई चेरिटेबल ट्रस्ट निम्नलिखित योजनाओं के माध्यम से मानव सेवा में समर्पण के साथ एक कोशिश कर रहा है ट्रस्ट इन कोशिशों को आगे बढ़ाने में प्रयासरत है और ये तभी संभव है जब आप श्री भी आगे बढ़कर संस्थान का हाथ थाम लें।

" प्रयास हमारा सहयोग आप सभी का "

निवाला एक कोशिश

100 लोगों के लिए भोजन सहयोग

1	1 साल	रु. 7,21,000/-
2	6 महिने	रु. 3,61,000/-
3	1 महिने	रु. 61,000/-
4	1 दिन	रु. 2100/-

सँवारे बचपन बेटी बचाओ. बेटी पढाओ

एक साल के लिए बालिका सहयोग

1	10 बालिकाऐं	रु. 1,20,000/-
2	5 बालिकाऐं	रु. 60,000/-
3	2 बालिकाऐं	रु. 24,000/-
4	1 बालिका	रु. 12,000/-

नैत्र शिविर

जाँच शिविर सहयोग

1	12 शिविर	रु. 3,51,000/-
2	6 शिविर	रु. 1,81,000/-
3	3 शिविर	रु. 91,000/-
4	1 शिविर	रु. 31,000/-

नैत्र चिकित्सा

मोतियाबिंद ऑपरेशन सहयोग

1	100 ऑपरेशन	रु. 2,50,000/-
2	50 ऑपरेशन	रु. 1,25,000/-
3	10 ऑपरेशन	रु. 25,000/-
4	1 ऑपरेशन	रु. 2500/-

निवाला वृद्धाश्रम / अनाथ आश्रम

भूमि व परिसर हेतु अनुदान

1	भूमि सेवा रतन	रु. 11,51,000/-
2	भूमि सेवा मनीषी	रु. 5,51,000/-
3	भूमि सेवा भूषण	रु. 1,11,000/-
4	भूमि सेवा दानी	रु. 51,000/-

सदस्यता

सदस्यता शुल्क

1	आजीवन सदस्य	रु. 31,000/-
2	वार्षिक सदस्य	रु. 11,000/-
3	मासिक सदस्य	रु. 1000/-
4	वार्षिक निवाला साधक	रु. 1100/-

कृपया सहयोग करें

आपश्री निम्न तरीकों से अपना सहयोग दे सकते हैं।

नकद/चैक/ड्राफ्ट/RTGS/NEFT/CARD

A/C NAME : KAMLABAI CHARITABLE TRUST
A/C No. : 50200020477561
RTGS/NEFT/IFSC : HDFC0000554

CARDS

VISA CARD : www.kbctindia.org
CREDIT CARD : www.kbctindia.org
DEBIT CARD : www.kbctindia.org

Paytm Accepted
or Enter Mobile Number 7231888811

Scan Paytm Code

निवेदन : कृपया अपना दान-सहयोग 'कमलाबाई चेरिटेबल ट्रस्ट' जयपुर के पक्ष में देय नकद/चैक/ड्राफ्ट/RTGS/NEFT/CARD/WALLET द्वारा किये गये भुगतान का विवरण संस्थान के पते पर प्रेषित करने का कष्ट करें ताकि दान-सहयोग प्राप्ति रसीद आपको तत्काल भेजी जा सके।

एक कोशिश निवाला प्रतिदिन निःशुल्क भोजन वितरण

संस्था के भामाशाह

अजय कुमार गुप्ता
अमित हापावत
अनील गागोदिया
अशोक चंदलानी
बाबुलाल लखोटिया
बच्चु लाल सैनी
देवेन्द्र सिंह (बन्टी)
बारी चौधरी
चारू गुप्ता
चोथमल बंसल
दीपक कार डेकोर
धिरेन बच्चन
डा. मदन मोहन शर्मा
डा. सारिका शेखावत
द्रश्यम कारपोरेशन
एडमंड 'से स्कुल
गजानंद जाँगिड़
गरिमा भुटानी
गायत्री देवी
गोकुल प्रसाद
गोरव पारासर
गुलाब चन्द
गुलाब चन्द सोमानी
जयराम शर्मा
जीण माता प्लाईवुड
के आर महेश्वरी
कंचन कैसेटस् एण्ड सिरीज
कोमल राजवानी
कुलदीप भुटानी
मदन चौधरी
मधु खण्डेलवाल
महेन्द्र चौधरी
महिला मंडल अम्बावाडी (महिला मंडल चमत्कारेशवर महादेव)
मनीष दागी
मनोज कुमार
मुकुट बिहारी चौहान
मुन्नी देवी बाघल
नाज टेन्ट हाउस
नरेश कुमार अग्रवाल
नीरज जी
नीतिन गोगीया
पी सी अग्रवाल
पदम चन्द जैन
पदम ढाका
पवन कुमार
पवन कुमार भार्गव
पूनम सिंह
राजेन्द्र कुमार शर्मा
राजेश दुग्गड
राजकुमार जाँगिड़
राकेश कुमार जैन
राम चन्द्रा जी
रामरतन मीणा
रणजीत नायक
ऋषभ
एस. सी बेटाला
एस. एल सोनी
स्मृति पल्टा
संदीप पारीक
संजीव सेंड़
संजु गुप्ता
संतोष राजोरिया
श्री पाल जैन
सुशील जैन
सुनील वर्मा
सुनील माथुर
सुरेन्द्र पारीक
तपश शर्मा
त्रिलोक पारीक
ऊर्वशी जी
वी. एम जैसवाल
वरूण शर्मा
विजय कुमार गुप्ता
विजय प्लास्टिक
विजय राज संकेलेचा
विमल अग्रवाल
विनोद रावत
विष्णु स्वरूप शर्मा
विवेक जाँगिड़
विश्वास जी
शिव कुमार शर्मा
पंजाब लठ हाउस
केशव ट्रेंडिंग कम्पनी
शंकर लालवानी
इन्द्रा अग्रवाल
सागर लालवानी
घनश्याम शर्मा
निहाल दागी
गणपती स्टील कॉरपोरेशन
शुषमा अग्रवाल
अशोक अग्रवाल
जय कुमार विशवानी
पप्पु चौधरी
जे एस ट्रेंडिंग
चन्द रतन दागा
परमानंद जाँगिड़
प्रखर अग्रवाल
केशव बेदी
बालाजी कंसट्रशन
अभय सिंघल
नीरमल लोदा
एस आर प्लाईवुड एण्ड स्टील
गोरीशंकर सोनी (जयपुर हॉर्डवेयर मशीनरी स्टोर)
अजय सिंह परिहार
अनिल शर्मा
शरद गुप्ता
नमोकार मंडल
अनुराग यादव
सुमित अग्रवाल
बाहुबली कॉक्रीट वर्क
शशी पाटीदार
जगदीश नारायण शर्मा
विनोद दालमिया
श्रीपाल जैन
मुरारीलाल सेठी
उषा शर्मा
वि.के. हरीत
देवेन्द्र कुमार
गौरव जाँगिड़
सुरज इन्डस्ट्रियल
गुलाब चन्द कोठारी
मनीष कपिल
संजय राका
राकेश कुमार जैन
कन्हैयाँलाल कट्टा
विनोद चावला
रवीन शर्मा
अभिषेक शर्मा
रामचन्द्र मेहर चंदानी
राम सिंह राठौड़
संजय टेक्सटाईल
मंजु पुगालीया
मिनाक्षी फाइबर इंडस्ट्रीज
पंडीत क्रेन सर्वीस
कविता गर्ग
निलकंठ पोलीमर
गजानंद देवेन्द्र एण्ड कंपनी
पी के गोयल
महेन्द्र दलीत
राज भारती फर्नीचर
सत्यनारायण अग्रवाल
जगदीश पालीवाल
श्रवण कुमार जाँगिड़
राजेन्द्र सिंह शेखावत
किसान सिंह
योगेश मेहता
सत्यनारायण अग्रवाल
बालकिशन जी
गणपती आभुषण भण्डार
सुरेन्द्र पारीक
अंकित पाठकर
रामरतन मीणा
अग्रवाल ट्रेडिंग कम्पनी
अंबिका इंडस्ट्रीज
अमित शर्मा
आंनद फूटवेयर
अनिल शर्मा
अंतली गुप्ता
बुद्धी प्रकाश जाँगिड़ (बिसनस्वरूप अन्नपुर्णा चैरिटेबल ट्रस्ट)
दामोदर जी अजमेरा
दीपक गुप्ता
धरम गर्ग
दिव्या वोहरा
दुर्गा ऐसोसिऐट
ऐशिया सिवीग मशीन
गजानंद जी अग्रवाल
गौरव दुग्गड़
घनश्याम शर्मा
हरीश कुमार जैन
हिमांशी अग्रवाल
इंडियन डायमंड टुल
जय भवानी कैरिंग सर्वीस
कैलाश नारायण जी अग्रवाल
किशन शर्राफ
किशन जैन
लक्ष्मी चन्द कोठारी
लॉयंस क्लब
महेश शोकिया
मोहित खण्डेलवाल
मुकेश कुमार सेनी
मुरारी मारासरीया
नन्दकिशोर जी
नरेश अग्रवाल
नीता गोयल
नविदा गुप्ता
पी.एस.जे. ज्वैलर्स
पुरणमल जी पारीक
पुरूषोतम कुमार शेखावत
पुष्पा पंचोरी
राहुल टंडन
राजेन्द्र विकास विशाल जैन
राजेश गोतम
राजेश कुमार सोढानी
एस मेकेनिकल्स
समीर सिंह
सतपाल शर्मा
सत्यनारायण अग्रवाल
सीमा जनेजा
श्रवण लाल जाँगिड़
शिवम जी
सुनील सोमानी
सुनिता मंगला
तन्नु ट्रेडर्स कम्पनी
तेज प्रकाश जैन
युनाईटेड़ ट्रांर्सफार्म
वल्लब माहिच जी
विजय कुमार गुप्ता
विजय सिंह
विनय गर्ग

एक कोशिश निवाला प्रतिदिन निःशुल्क भोजन वितरण

सँवारे बचपन

आप और हम मिलकर
थाम लें देश की बेटियों का हाथ और सँवारे
उनका बचपन

Education *** Support *** Love *** Help *** Hope *** Care

कमलाबाई चेरिटेबल ट्रस्ट

नई राह - नई दृष्टि..! , ज्ञान वही - वही सृष्टि..!!

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ प्रयास हमारा सहयोग आपका